JULY TO SEPTEMBER 2014-15

विगत तीन माह की गतिविधियां

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक सम्पन्न

कृषि विज्ञान केंन्द्र, कवर्धा, कृषि विज्ञान केंन्द्र, राजनॉदगॉव एवं कृषि विज्ञान केंन्द्र, दुर्ग के द्वारा दिनांक 19.6.2014 को राजनॉदगॉव के जिला पंचायत समागार में सॉतवी वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंन्द्र, कवर्धा, कृषि विज्ञान केंन्द्र, राजनॉदगॉव एवं कृषि विज्ञान केंन्द्र, दुर्ग के कार्यक्रम समन्वयकों द्वारा विगत वर्ष 2013–14 का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया एवं आगामी वर्ष 2014–15 की प्रमुख गतिविधियॉं जैसे अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, प्रक्षेत्र परीक्षण एवं बीजोत्पादन कार्यक्रम पर विस्तृत चर्चा की गई। इस कार्यक्रम में प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. के. एल. नन्देहा, निदेशालय विस्तार सेवाएं, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर, डॉ. ए. के. दुबे, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, राजनांदगांव, डॉ. पी. दुबे, अधिष्ठाता, उद्यानिकी महाविद्यालय, राजनांदगांव एवं डॉ. प्रियंका शुक्ला, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत, राजनांदगांव के विशेष आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में तीनो कृषि विज्ञान केन्द्रो के वैज्ञानिक एवं प्रगतिशील कृषकों की सहभागिता रही।

कृषक प्रशिक्षण सम्पन्न

कृषि विज्ञान केंन्द्र, कवर्धा द्वारा दिनांक 26.6.2014 को विकासखंड बोडला के ग्राम मादीमाठा में आदिवासी कृषकों एवं कृषक महिलाओं को दलहनी फसलों की उपयोगिता एवं महत्व के बारे में बताया गया। साथ ही साथ अच्छे उत्पादन के लिए कृषि कियाओं जैसे बीजों का चुनाव, बीजोपचार, पानी एवं उर्वरक प्रबंधन, कीट एवं रोग प्रबंधन संबंधित जानकारी विस्तार से दी गई। इस प्रशिक्षण में 30 कृषक एवं कृषक महिलाओं नें भाग लिया।

प्रक्षेत्र परिक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रदर्शन को जाने वाली तकनीक	किसान	लाभार्थी
1.	धान	महामाया/ स्वर्णा	समन्वित प्रबंधन द्वारा धान मे झुलसा रोग के नियंत्रण का आकलन	02	04
2.	धान	करमा मासूरी	छिटकवा विधि से खरपतवार नियंत्रण हेतु कम बीज दर एवं अंकुरण पश्चात खरपतवारनाशी के प्रभाव का आकलन	04	08
3.	सोया बीन	जे.एस.95-60	सोयाबीन आधारित फसल पद्धति का आकलन	03	06
योग				09	18

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	लाभार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	85
2.	पौध संरक्षण	4	1	87
3.	उद्यानिकी	4	1	82
4.	मृदा विज्ञान	4	1	86
5.	पशुपालन	4	1	86
6.	मत्स्यकी	4	1	85
7.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	82
योग		28	7	593

विस्तार गतिविधियॉं

विषय	संख्या	लाभार्थी
वैज्ञानिको का खेतो में भ्रमण	10	20
केन्द्र पर कृषको का भ्रमण	15	15

उन्नत कृषि

इंदिरा किसान मितान
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

समृद्ध किसान

त्रैमासिक पत्रिका: जुलाई,अगस्त-सितम्बर, 2014

संपादक मंडल

संरक्षक : डॉ. एस.के.पाटिल
कुलपति, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक : डॉ. एम.पी. ठाकुर
निदेशक विस्तार सेवाएँ, इं.गां.कृ.वि.रायपुर (छ.ग.)

प्रेरणा स्त्रोत : डॉ. अनुपम मिश्रा
अति. परियोजना निदेशक
जोन -7(मा.कृ.अनु.परि.)जबलपुर

प्रकाशक एवं प्रधान संपादक :
डॉ. टी.डी.साहू
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

संपादक : डॉ. नूतन रामटेके
पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन

सह संपादक :
डॉ. बी.पी.त्रिपाठी
पौध रोग विज्ञान

श्रीमती सुलोचना भुईंया
मत्स्यकी

श्रीमती पमिला कांत
उद्यानिकी

इं.टी.एस.सोनवानी
कृषि अभियांत्रिकी

श्री बी.एस. परिहार
प्रक्षेत्र प्रबंधक

श्री वाई.के कौशिक
तकनीकि सहायक

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्

Agri-search with a human touch

मासिक कार्यशाला में कम वर्षा की स्थिति में खेती हेतु सुझाव दिया गया

कृषि विज्ञान केंन्द्र, कवर्धा द्वारा दिनांक 3.6. 2014 को मासिक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंन्द्र, कवर्धा एवं कृषि विभाग कें अधिकारियों की उपस्थिति में खरीफ फसलों की तैयारी पर महत्वपूर्ण चर्चा की गई। इस वर्ष मौसम विभाग की चेतावनी के अनुसार कम वर्षा की स्थिति को देखतें हुए धान की कम अवधि वाली फसलो का चुनाव एवं सीधी बोनी तथा नींदानाशक का उपयोग करने पर विचार किया गया। सोयाबीन में अंकुरण की समस्या को देखते हुए 15 से 20 प्रतिशत ज्यादा बीज बोने की सलाह दी गई।

ऑचलिक परियोजना निदेशालय जोन-7 के वैज्ञानिकों द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र,कवर्धा का भ्रमण

ऑचलिक परियोजना निदेशालय जोन –7, जबलपुर के वैज्ञानिक डॉ. प्रेमचंद, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ए. पी. द्ववेदी, डॉ. अनिल दीक्षित, प्रमुख वैज्ञानिक, NIBSM (ICAR), रायपुर ने दिनांक 11.06.2014 को कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा का भ्रमण कर केन्द्र के वैज्ञानिकों के साथ प्रक्षेत्र का निरीक्षण किया। उन्होंने केन्द्र की गतिविधियों की जानकारी ली एवं आगामी खरीफ फसलों की तैयारी पर कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यक्रम समन्वयक एवं संबधित विषयों के विषय वस्तु विशेषज्ञों से विस्तृत चर्चा की।

JULY TO SEPTEMBER 2014-15

आगामी तीन माह की प्रस्तावित गतिविधियां

प्रक्षेत्र परिक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	धान	महामाया/स्वर्णा	समन्वित प्रबंधन द्वारा धान मे झुलसा रोग के नियंत्रण का आकलन	02	04
2.	धान	करमा मासुरी	छिड़कवा विधि से खरपतवार नियंत्रण हेतु कम बीज दर एवं अंकुरण पश्चात खरपतवारनाशी के प्रभाव का आकलन	04	08
3.	धान	करमा मासुरी एवं सुगंधित (श्याम जीरा, कारी, जिवाम,कुबरी मोहर)	धान में तना छेदक नियंत्रण हेतु समन्वित प्रबंधन का आकलन	02	04
4.	धान	महामाया	धान में आभीसी कन्डवा रोग प्रबंधन का आकलन	02	04
5.	सोयाबीन	जे.एस.95-60	सोयाबीन आधारित फसल पद्धति का आकलन	03	06
6.	सोयाबीन	जे.एस.335	सोयाबीन में सीधी बोनी के लिए रेज्ड बेड प्लान्टर का आकलन	02	04
7.	मिर्च	इंदिरा मिर्च-प्रथम	मिर्च के नवीन किस्म का आकलन	0.9	06
8.	मछली	रोहू,कतला	तालाब में संचय पूर्व मछली उत्पादन का आकलन	0.4	04
9.	सोयाबीन	जे.एस.30-35	खरपतवारनाशी का आकलन	02	04
योग				18.3	44

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	धान	स्वर्णा	झुलसा रोग नियंत्रण हेतु रासायनिक दवाई (फोलीक्योर) का प्रदर्शन	12	12
2.	धान	करमा मासुरी	धान की उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
3.	सोयाबीन	जे.एस.95-60	सोयाबीन की उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
4.	बरबट्टी	इंदिरा बरबट्टी लाल	बरबट्टी के उन्नत किस्म का प्रदर्शन	0.9	07
5.	अरहर	आशा	अरहर की उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
योग				48.9	55

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (आदिवासी उप परियोजना अंतर्गत)

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	अरहर	आशा	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
2.	उड़द	टी.ए.यु-1	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
योग				24	24

विस्तार गतिविधियॉं

विषय	संख्या	लाभार्थी
वैज्ञानिको का खेतो में भ्रमण	12	35
केन्द्र पर कृषको का भ्रमण	60	60

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	लाभार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	80
2.	पौध संरक्षण	4	1	88
3.	उद्यानिकी	4	1	87
4.	मृदा विज्ञान	4	1	86
5.	पशुपालन	4	1	84
6.	मत्स्यकी	4	1	83
7.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	82
योग		28	7	600

बीजोत्पादन कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, नेवारी प्रक्षेत्र में खरीफ 2014-15 में 22.5 एकड़ रकबा में निम्न बीजोत्पादन कार्यक्रम लिया जा रहा है।

क्र.	फसल	किस्म	उत्पादित होने वाला बीज का प्रकार	रकबा (एकड़)
1.	सोयाबीन	जे.एस.335	प्रमाणित	17.5
2.	मूंग	एच.यू.एम16	प्रजनक	5.0
योग				22.5

कृषि महाविद्यालय में अध्यापन

क्र.	अधिकारी का नाम	पदनाम	महा.वि.मे अध्यापन	वर्ष	विषय
1.	डॉ टी.डी.साहू	कार्यक्रम समन्वयक (मृदा विज्ञान)	संत कबीर कृ. महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र कवर्धा	प्रथम	1
2.	श्रीमती सुलोचना भुआर्य	विषय वस्तु विशेषज्ञ (मत्स्यकी)	संत कबीर कृ. महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र कवर्धा	तृतीय	1
3.	डॉ.बी.पी.त्रिपाठी	विषय वस्तु विशेषज्ञ (पौध रोग विज्ञान)	कृ.महा.विद्या. बेमेतरा	प्रथम	1
योग					3

बुक-पोस्ट
भारत शासन सेवार्थ

कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)
पिन-491995
फोन/फैक्स 07741-299124

प्रति,
श्री/श्रीमती/डॉ. ....

सामयिक सलाह 2014

क्या करें.....? कब करें.....? क्यों करें.....?

जुलाई माह में

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- धान की रोपाई कतार में करें। धान में कतार से कतार की दूरी किस्म के अनुसार 15-20 से.मी.की दूरी पर रखें।
- रोपा धान में नीदानाशक दवा पाइरोजो सल्फूरान इथालिन 10 प्रतिशत WP(साथी) 80 ग्राम दवा का छिड़काव रोपा से 3 दिन के अंदर करें।
- सोयाबीन की फसल 20-25 दिन की हो तथा नींदा का प्रकोप ज्यादा दिख रहा हो तो इमेझाथाइपर (परस्यूट, लगाम) की अनुशंसित मात्रा का छिड़काव करें।
- छिड़काव पध्दति से धान की बुवाई पहली वर्षा आने पर तुरंत करें। रोपाई के लिए 15 दिन पहले हरी खाद को जमीन में मिला दें फिर मचाई करें।
- सीधे बोये गये धान के खेत में पानी की उपलब्धता के अनुसार बियासी करें। छिड़काव एवं कतार बोनी में नींदानाशक दवा का उपयोग करें।
- सोयाबीन, अरहर, अरण्डी, तिल, मूंगफली, कपास की बुवाई 15 जुलाई तक पूरी करें।
- मेड़ पर दलहनी, तिलहनी एवं चारे वाली फसलों की बुवाई।

उधानिकी

- टमाटर, बैगन, मिर्च, फूलगोभी की रोपणी तैयार करें। फूलगोभी की अगेती किस्म का तैयार पौध की रोपाई करें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों की बोआई करें तथा टमाटर बैगन मिर्च आदि सब्जियों के तैयार पौधों की रोपाई करें।
- फ्रेंचबीन, भिण्डी, गवांर फल्ली, बरबट्टी की बुवाई करें।
- आम, आंवला, अमरुद चीकू, कटहल आदि फल वृक्षों में खाद एवं उर्वरक देने का कार्य करे।
- नये फल वृक्षों को लगाने का कार्य पूरा करें।
- आम, अनन्नास, नीबू, जामुन आदि के विभिन्न परिरक्षित पदार्थ तैयार करें।
- करौंदा से जेली, जैम, मुरब्बा एवं अचार आदि बनाएं।
- फल वृक्षों के पास बने थालों की भरपायी करें एवं बगीचे में जल निकासी की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- केले के पौधों की रोपाई का कार्य आरंभ करें। पुराने केले के पौधों के बगल में निकलने वाले सकर को काट दें।
- तीखुर, लेमनघास, ब्राम्ही, सतावर, सर्पगंधा, कस्तूरी भिण्डी आदि की बुवाई करें।
- पूर्व में लगाई गई सफेद मूसली की निंदाई गुड़ाई करें। मेंथा की पहली कटाई करें।

पशुपालन

- पशुओं को हरा चारा खिलाया जाये तथा गलघोंटू बीमारी से बचाव हेतु माह के अंत तक टीकाकरण अवश्य करा दें।
- प्रतिदिन दूध निकालने के पूर्व दूध की बाल्टी की सफाई क्लोरीन के पानी से या गरम पानी से करें।
- चारे के लिए मक्का की दूसरी फसल बोने का उचित समय है। बीज की मात्रा प्रति एकड़ 30 कि. ग्रा. प्रयोग करनी चाहिए।

अगस्त माह में

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- हरी काई का प्रकोप दिखे तो पानी को खेत से निकाल देवें। खेत में जिस जगह से पानी अंदर जाता है, वहाँ कापर सल्फेट (नीला थोथा) को पोटली में बांधकर रखें।
- रोपा लगाने के पूर्व धान के थरहा की जड़ों को क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. दवा का 1मिली/लीटर पानी तथा 2 किलो यूरिया मिलाकर 3-4 घंटे डुबोकर रोपा लगायें।
- धान की रोपनी/प्रथम अवस्था में कीटों से बचाव हेतु थरहा को कारटाप हाइड्रोक्लोराइड S.P की अनुशंसित मात्रा से उपचारित करें।
- गन्ना फसल में पायरिला नामक कीट का प्रकोप दिखे तो क्लोरोएन्टालिलीप्रोल (फरटेरा) 10कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- धान की रोपाई 10 अगस्त एवं बियासी एवं चलायी कार्य 15 अगस्त तक पूर्ण करें।
- धान, तिल, कपास, मक्का एवं अरण्डी फसलों में नत्रजन की अनुशंसित मात्रा का उपयोग करें।
- धान में कीट नियंत्रण हेतु कारटाप हाइड्रोक्लोराइड WG दानेदार 15 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

उधानिकी

- कद्दूवर्गीय फसलों में 25-30 कि.ग्रा.यूरिया प्रति हैक्टेयर की दर से डालें मथा लाल कीड़े से बचाव हेतु कार्बोरिल पावडर 1.5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर भुरकाव करें।
- अदरक एवं हल्दी में पौध गलन की रक्षा हेतु ब्रासिकाल 1.5 ग्राम लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़कें।
- नये फल बाग का रोपाई यदि नही पूरा कर पाये है तो उसे पूरा करें।
- आम एवं बेर में उपरोपण, कलिकायन तथा शीर्ष कार्य करें।
- नर्सरी में बडिंग एवं ग्राफिटंग द्वारा नये-नये पौधे तैयार करने का कार्य चालू रखें।
- नीबूंवर्गीय पौधों पर कैंकर रोग प्रकट होने पर प्रति जैविक स्ट्रेप्टोसायक्लिन (500 मि.ग्रा./लीटर ताम्रयुक्त दवा (3 ग्राम/लीटर) का सेन्डोविट आर्द्रक (3 मि.ली./लीटर) के साथ मिलाकर सूखे दिनों में दोपहर के बाद छिड़काव करें।
- अश्वगंधा की रोपाई करें। अन्य औषधीय फसलों में निंदाई गुड़ाई कर खाद डालें।

पशुपालन

- गाय, भैंस, भेड या बकरी यदि गर्मी में आयी हो तो उन्हे प्राकृतिक या कृत्रिम रुप से गर्भित करा दिया जाये। पशुओं में किसी भी तरह के रोग के लक्षण दिखे तो अपने नजदीकी पशु चिकित्सालय की मदद लें।
- मुर्गी घर के बिछावन को सूखा एवं धूल रहित रखें।
- मुर्गियों के लिए संतुलित आहार की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- पशुओं को तालाब का गन्दा पानी न पिलाये ।

सितम्बर माह में

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- धान की फसल में झुलसा रोग, नाव के आकार के धब्बे दिखाई देने पर ट्राईसाइक्लोजोल 300 ग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें एवं यूरिया का छिड़काव कुछ दिन न करके पोटाश 25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर से छिड़काव करें।
- रोपा तथा बोता (बियासी) पध्दति में प्रमुख रुप से तनाछेदक, गंगई, पत्तीमोड़क, भेंसा वर्म (अधिक पानी भराव वाले क्षेत्रों में) तथा हरा माहो का प्रकोप रहता है। तनाछेदक तथा गंगई का प्रकोप आर्थिक स्तर बिन्दु से अधिक होने पर दानेदार दवा जैसे कार्बोफ्यूरान 3 जी (30 कि.ग्रा./है.) का प्रयोग करें अथवा कार्टाप हाइड्रोक्लोराइड दानेदार का प्रयोग करें। दानेदार दवा के उपयोग के समय खेत में पानी/नमी होना आवश्यक है परन्तु पानी बहता हुआ न रहे।
- धान में जीवाणु जनित झुलसा रोग के लक्षण दिखने पर स्ट्रेप्टोमाइक्लीन 6 ग्राम प्रति एकड़ की दर से पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- धान में पर्णच्छद अंगमारी रोग के नियंत्रण हेतु हेक्साकोनाजोल दवा का छिड़काव पानी की सतह के पास वाले पौधे के भागों पर करना चाहिये।
- धान में किस्म के अनुसार गभोट अवस्था में यूरिया की शेष मात्रा कतार में डालें।
- धान तथा अन्य खरीफ फसलों में आवश्यकता अनुसार नींदा नियंत्रण करें।
- मूंग, उड़द में पकने की अवस्था आ गई हो तो फलियों की तुड़ाई कर सुरक्षित स्थान पर रखें।
- उड़द व मूंग में भभूतिया रोग लगने पर कार्बेन्डाजिम (1 ग्राम/ली. पानी) या किनोकेप (1 मि.ली./पानी) में से किसी एक दवा का छिड़काव करें।
- सोयाबीन में जीवाणुजनित स्फोट रोग दिखने पर स्ट्रेप्टोसायक्लिन (300मि.ग्रा.) ताम्रयुक्त दवा (3 ग्राम) का छिड़काव करना चाहिये। यह छिड़काव 10-12 दिन के अन्तराल पर छिड़काव दोहराना चाहिये।
- वृक्षों में बोर्डो पेस्ट लगाएं।
- मूंगफली अथवा अन्य फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले सफेद ग्रब का प्रकोप होने पर मिट्टी पलटने के समय क्लोरपायरीफास 1.5 प्रतिशत चूर्ण का 25कि./हेक्टेयर की दर से जमीन में भुरकाव करें।
- मक्के की संकर किस्मो में 25 से 30 किलो ग्राम नत्रजन मंजरी बनते समय प्रयोग करें। माह के अंत में कुलथी, तोरिया व रामतिल की बोवाई करें।
- इस माह में सोयाबीन की फसल में गर्डल बीटल कीड़े के प्रकोप की संभावना रहती है। अतः कीट पर विशेष निगरानी करें व नियंत्रण करें।

उधानिकी

- गोभी की अगेती फसल में निंदाई गोड़ाई कर नत्रजन 40 किलोग्राम प्रति हैक्टर दें।
- अदरक एंव हल्दी मे मिट्टी चढ़ाये व पानी दें।
- आम में बोर्डो पेस्ट का लेप लगायें।
- पुष्प प्राप्त करने के लिए गैलेडियोलाई के कंदो की बुआई करें। गोबर खाद के साथ 10 ग्राम नत्रजन 20ग्राम स्फुर एवं 20 ग्राम पोटाश प्रति वर्ग मीटर में छिड़काव करें।
- गेंदा में पिंचिंग (फुनगी की कटाई) की प्रक्रिया अपनायें।
- सभी औषधिय पौधों की कीट व्याधियों से रक्षा करें। वर्षा न होने की दशा में सिंचाई करें।

पशुपालन

- भैंसों में ब्यात का समय हो गया है। गर्भवती भैंसों को पौष्टिक दलहनी चारे के अलावा खनिज लवण व विटामिन युक्त आहार दें।
- भेड़-बकरियों को नमी युक्त फर्श पर न रखा जावे।
- मुर्गियों को संतुलित आहार की व्यवस्था सुनिश्चित करें।